بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 12 जुलाई 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

बनू मुस्तलक़ नामक युद्ध के हालात एवं घटनाओं का बयान तथा मुहर्रम के हवाले से दुआ की तहरीक।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-12.07.24

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज बनू मुस्तलक़ अथवा मरैसीअ नामक युद्ध का वर्णन करूँगा। यह लड़ाई कब हुई? इसके सम्बंध में इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ यह कहते हैं कि यह छः हिजरी में हुई जबकि कुछ विद्वानों ने 5 हिजरी या 4 हिजरी बयान किया है परन्तु हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. के अनुसंधान के अनुसार यह घटना शअबान 5 हिजरी की है। यह युद्ध बनू ख़ुज़ाअः की एक शाखा बनू मुस्तलक़ नामक क़बीले के साथ हुआ इस लिए इसको बनू मुस्तलक़ नामक युद्ध कहा जाता है तथा यह क़बीला मुरैसीअ नामक कुएँ के पास रहता था इस लिए इस युद्ध का दूसरा नाम मुरैसीअ नामक युद्ध भी है।

बनू मुस्तलक़ क़बीले के लोग क़ुरैश के दोस्त थे तथा उन्होंने यह संकल्प किया था कि हम लोग एक जान होकर क़ुरैश के साथ रहेंगे तथा इसी सन्धि के अंतर्गत बनू मुस्तलक़ ओहद की लड़ाई में क़ुरैश काफ़िरों की सेना में शामिल थ।

इस युद्ध का एक कारण यह था कि बनू मुस्तलक़ इस्लाम से दुश्मनी में निडर हो गए थे। उन्हें काफ़िर क़ुरैश का सम्पूर्ण समर्थन एवं सहायता प्राप्त थी। ओहद के युद्ध में मुसलमानों के विरुद्ध लड़ाई में शामिल होने के कारण अब ये खुल कर मुसलमानों से मुक़ाबले पर उतर आए थे तथा उनक उपद्रव में अति वृद्धि हो गई थी। दूसरी बात यह थी कि मक्का मुकर्रमा से जाने वाले केन्द्रीय मार्गों पर बनू मुस्तलक़ का कन्ट्रोल था। ये लोग मक्का में मुसलमानों की गतिविधियों को रोकने के लिए सुदृढ़ रुकावट का रूप रखते थे। तीसरा महत्त्व पूर्ण कारण यह था कि बनू मुस्तलक़ के सरदार हारिस बिन अबी ज़िरार ने अपनी क़ौम तथा अरब के निवासियों को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ युद्ध के लिए तय्यार किया और मदीने से 96 मील की दूरी पर एक स्थान पर सेना को एकत्र करना शरु कर दिया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन ﷺ में इसके बारे में लिखा है कि क़ुरैश का विरोध दिन प्रतिदिन अधिक भयावह स्थिति का होता जाता था। वे अपने षड्यन्त्र से अरब के अनेक क़बीलों को इस्लाम तथा इस्लाम के संस्थापक के विरुद्ध खड़ा कर चुके थे किन्तु अब उनकी दुश्मनी ने एक नई शंका पैदा कर दी थी कि हिजाज़ के वे क़बीले जो मुसलमानों के साथ अच्छे सम्बंध रखते थे, वे भी क़ुरैश के उपद्रव से मुसलमानों के विरुद्ध उठना शुरु हो गए। इस मामले में बनू ख़ज़ाअः नामक क़बीले की एक शाखा बनू मुस्तलक़ ने पहल की और मदीने पर हमला करने की तय्यारी शुरु कर दी। उनके रईस हारिस बिन अबी ज़िरार ने उस क्षेत्र के अन्य क़बीलों को भी अपने साथ मिला लिया।

आँहज़रत ﷺ को जब इसकी सूचना मिली तो आप स. ने सावधानी पूर्वक एक सहाबी बुरैदा बिन अल-हुसैब رضي الله عنه को जानकारी प्राप्त करने के लिए बनू मुस्तलक़ की ओर रवाना फ़रमाया। उन्होंने वापस आकर बताया कि अत्यंत उत्साह क साथ मदीने पर हमले की तय्यारियाँ हो रही हैं। आप स. न मुसलमानों को बुलाया तथा दुश्मन के बारे मे अवगत किया। इस्लामी सेना तुरन्त तय्यार होकर रवाना हो गई।

आप स. को रवानगी का वर्णन सविस्तार इस प्रकार बयान हुआ है। एक रिवायत के अनुसार आप स. ने हज़रत ज़ैद बिन हारसा رضي الله عنه को मदीने में नायब नियुक्त किया। इब्ने हिश्शाम ने हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी رضي الله عنه का नाम बयान किया है। इसी तरह हज़रत नुमैला बिन अब्दुल्लाह رضي الله عنه का नाम भी बयान किया जाता है। अतएव सेना रवाना हुई तथा इस्लाम की सेना में 700 लोग थे। रसूलुल्लाह ﷺ ने 2 शअबान 5 हिजरी को सोमवार के दिन मदीना मुरव्वरा से बनू मुस्तलक़ की ओर प्रस्थान किया। हज़रत मसऊद बिन हुनैदा رضي الله عنه रास्ते के गाईड थे। इसके विस्तार में आगे यह बयान हुआ है कि आँहज़रत ﷺ के साथ अनेक मुनाफ़िक़ भी निकले जो कि इससे पहले इस प्रकार के युद्ध में जाने के लिए नहीं निकले थे। उनका उद्देश्य जिहाद नहीं था अपितु वे माले ग़नीमत के लिए निकले थे कि यदि जीत हुई तो हमें विजय से प्राप्त सम्पत्ति मिलेगी।

सेना में केवल तीस घोड़े थे किन्त ऊँटों की संख्या कुछ अधिक थी तथा इन्हीं घोड़ों एवं ऊँटों पर मिल जुल कर मुसलमान बारी बारी सवार होते थे। रास्ते में मुसलमानों को काफ़िरों का एक जासूस मिल

गया जिसे उन्होंने पकड़ कर आँहज़रत ﷺ की सेवा में पेश किया तथा आप स. ने इस पूछ ताछ के बाद कि वास्तव में जासूस ही है, उससे काफ़िरों के सम्बंध में कुछ जानकारी लेना चाही परन्तु उसने बताने से इंकार किया तथा चूँकि उसका व्यवहार संदिग्ध था इस लिए युद्ध में प्रचलित उस समय के क़ानून के अनुसार हज़रत उमर رضي الله عنه ने उसकी हत्या कर दी तथा इसके बाद इस्लाम की सेना आगे रवाना हुई।

बनू मुस्तलक़ को जब मुसलमानों के आने तथा अपने जासूस के मारे जाने की सूचना मिली तो वे अत्यंत भयभोत हुए क्यूँकि उनका मूल उद्देश्य तो यह था कि किसी तरह मदीने पर अचानक हमला करने का अवसर मिल जाए परन्तु आँहज़रत ﷺ की बुद्धिमानो के कारण अब उनको लेने के देने पड़ गए थे।

वे अत्यधिक रौब में आ गए तथा उनकी सहायता के लिए एकत्र होने वाल अन्य क़बीले ख़ुदा के इरादे के प्रभाव में कुछ ऐसे भयभीत हुए कि तुरन्त उनका साथ छोड़ कर अपने घरों को चले गए। किन्तु बनू मुस्तलक़ को क़ुरैश ने मुसलमानों की दुश्मनी का ऐसा नशा पिला दिया था कि वे फिर भी युद्ध के संकल्प से बाज़ न आए तथा पूरी तय्यारी के साथ इस्लामी सेना के मुक़ाबले के लिए तत्पर रहे।

जब आँहज़रत ﷺ मुरैसीअ नामक स्थान पर पहुंचे तो आप स. के लिए चमड़े का एक तम्बू लगाया गया। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها आप स. के साथ थीं। आप स. ने सहाबा किराम رضي الله عنهم को पंक्तिबद्ध किया। मुहाजिरों का झंडा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضي الله عنه को दिया। दूसरा कथन यह है कि हज़रत अम्मार बिन यासिर رضي الله عنه को दिया गया। अन्सार का झंडा हज़रत सअद बिन उबादा رضي الله عنه को दिया गया। आप स. ने हज़रत उमर رضي الله عنه को आदेश दिया कि दुश्मन की सेना के सामने घोषणा करें कि ऐ लोगो! कहो अल्लाह के अतिरिक्त कोई आराधना योग्य नहीं, तथा इसके माध्यम से अपने जान माल सुरक्षित कर लो। हज़रत उमर رضي الله عنه ने इसी तरह किया, परन्तु मुशरिकों ने इंकार कर दिया। कुछ देर तक तीर फेंके जाते रहे।

सबसे पहला तीर मुशरिकों के एक व्यक्ति ने फेंका तथा मुसलमान भी कुछ देर तीर अंदाज़ी करते रहे। फिर आप स. ने सहाबा किराम رضي الله عنهم को आदेश दिया कि हमला करें। उन्होंने एक जुट होकर हमला किया। मुशरिकों में स कोई भी भाग न सका। उनमें से दस लोगों का वध हुआ तथा शेष सभी बन्दी बना लिए गए। आप स. न उनके स्त्री पुरुष एवं संतानां तथा पशुओं को पकड़ लिया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने इसको सविस्तार इस प्रकार बयान किया है कि जब आँहज़रत ﷺ मुरैसीअ पहुंचे तो आप स. ने डेरा डालने का आदेश दिया तथा पंक्तिबद्ध होने एवं झंडों के वितरण के बाद आप स. के आदेशानुसार हज़रत उमर رضي الله عنه ने बनू मुस्तलक़ में एक ऐलान किया कि यदि अब भी वे इस्लाम से दुश्मनी करने से रुक जाएँ और आँहज़रत ﷺ की आधीनता को स्वीकार कर लें तो उनको अमन दिया जाएगा तथा मुसलमान वापस लौट जाएँगे, परन्त् उन्हों ने कठोरता के साथ इंकार किया तथा युद्ध के लिए तय्यार हो गए, यहाँ तक कि सबसे पहला तीर जो इस युद्ध में चलाया गया वह उन्हीं के

आदमी ने चलाया था। जब आँहज़रत ﷺ ने उनकी यह स्थिति देखी तो आप स. ने भी सहाबा को लड़ने का आदेश दिया। थोड़ी देर दोनों पक्षों के बीच ख़ूब तीर चलाए गए जिसके बाद आँहज़रत ﷺ ने सहाबा को एक साथ धावा बोलने का आदेश दिया तथा इस अचानक धावे के परिणाम स्वरूप काफ़िरों के पाँव उखड़ गए। परन्तु मुसलमानों ने ऐसी समझदारी के साथ उनका घेरा डाला कि पूरी की पूरी क़ौम घेरे में आकर हथ्यिार डालने पर विवश हो गइ। केवल दस काफ़िर तथा एक मुसलमान की हत्या पर इस युद्ध का, जो एक भायनक स्थिति पैदा कर सकता था, अन्त हो गया।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आज मुहर्रम के हवाले से दुआ की ओर भी ध्यान दिलाना चाहता हूँ। यह एक कष्टदायक घटना है जिसमें अत्याचार एवं पशता की चरम सीमा का उदाहरण है। आँहज़रत ﷺ के नवासे तथा आप स. के परिवार के लोगों को शहीद किया गया परन्तु मुसलमानों का दुर्भाग्य यह है कि इससे कुछ सीखने के बजाए यह अत्याचार अब तक चल रहा है। मुहर्रम में शिया सुन्नी फ़साद अथवा आतंक के हमलों की घटनाएँ बढ़ जाती हैं। दोनों पक्षों में प्राणों की हानि भी होती है। अल्लाह तआला ने इस फ़साद को समाप्त करने के लिए अपने वादे के अनुसार व्यवस्था फ़रमाई है, उसे ये क़बूल करने को तय्यार नहीं हैं। काश, कि इन लोगों को समझ आए।

अतएव इन दिनों में अहमदियों को दरूद शरीफ़ पढ़ने तथा मुसलमानों की एकता के लिए विशेष दुआओं की ओर ध्यान देना चाहिए। अपनी स्थितियों को भी बेहतर करने तथा अल्लाह तआला से सम्बंध में बढ़ने की ओर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। अल्लाह तआला सबको इसकी तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाए।

हुज़ूरे अनवर ने अन्त में मुकर्रम बोनजा महमूद साहब ऑफ़ टोगो की शहादत का वर्णन फ़रमाया तथा मुकर्रम रशीद अहमद साहब, मुकर्रम चौधरी मुतीउर्रहमान साहब, मुकर्रमा मंजूर बेगम साहिबा तथा मास्टर सआदत अशरफ़ साहब की मृत्यु पर उनका सद्वर्णन तथा उनकी जमाअती सेवाओं का वर्णन फ़रमाया। हुज़ूरे अनवर ने इन मतका क जनाज़ को नमाज़ गायब पढान को भो घाषणा फरमाइ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131